Bipolar Nature of Reality – An-International Journal **ISSN 2394-6059**
(BNRAIJ) 2018 Vol.3, Issue No. 1, JAN-JUNE.

श्रीमद् भगवद् गीता का शैक्षिक महत्व

जितेन्द्र कुमार
शोध छात्र
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली 110016

सार

अपने स्वधर्म से भटकते हुए युद्ध से विमुख अर्जुन की उद्विग्न और दैन्य मनोदशा को गीता में 'विषादयोग' की संज्ञा दी गई है। वहां गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने 'योग' को एक नई परिभाषा देकर निष्काम कर्मयोग से जोड़ा है जिसका तात्पर्य है ईश्वर के प्रति समर्पण भाव रखते हुए आत्म-विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया से युक्त हो जाना। इसलिए गीता कुशलतापूर्वक कर्म के निष्पादन को योग का विशेष लक्षण मानती है- "तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्" -गीता,2.50
वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा प्रदर्शित कर्मयोग का मार्ग अनुसरणीय है । विद्यार्थी को मानसिक रूप से मज़बूत बनाने के लिए आवश्यक है कि हम गीता में उपलब्ध मृदुल एवं प्रणाली उपागाम के सूत्रों का अनुसरण कर हमारी शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ कर विश्व की अग्रणी शिक्षा एवं ज्ञान आधारितअर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित कर अपने खोए हुए विश्वगुरु के गौरव को पुनः प्राप्त करें।

श्रीमद् भगवद् गीता भारतियों द्वारा माना जाने वाला पूजनीय ग्रंथ है । जिसकी उपस्थिति लगभग प्रत्येक घर में मिलेगी। गीता में कृष्ण भगवान स्वयं गुरूओं के गुरु के रूप में ज्ञान गंगा प्रवाहित कर रहे हैं । भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य जैसे प्रकांड विद्वानों का मार्गदर्शन करते हुए दिखाई देते हैं । गीता को ज्ञान, भक्ति एवं कर्म की त्रिवेणी कहा जाता है क्योंकि गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं कर्मयोग की विस्तार से चर्चा की है । जोकि तीनों ही मार्गों से हमें कल्याण मार्ग पर अग्रसरित करती है । आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखने पर हम पाते हैं कि ज्ञानयोग या भक्तियोग द्वारा ईश्वर प्राप्ति या मोक्ष की प्राप्ति सरल नहीं है । वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा प्रदर्शित कर्मयोग का मार्ग अनुसरणीय है ।
आज हमारी कक्षाओं में हमारे विद्यार्थी परिश्रम से विमुखता की ओर अग्रसर हो रहे हैं । अत: आज हमारा छात्र दिन प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के अनैतिक उपक्रमों में संलग्न हो रहे हैं जैसे मादक पदार्थों का सेवन , बड़े या बलिष्ठ बच्चों द्वारा कमज़ोर बच्चों को परेशान करना (बुलिंग), रैगिंग,तनाव,मानसिक अवसाद, आत्महत्या आदि । इस परिस्थिति को बदलने एवं विद्यार्थी को मानसिक रूप से मज़बूत बनाने के लिए आवश्यक है कि हम गीता में उपलब्ध मृदुल एवं प्रणाली उपागाम के सूत्रों का अनुसरण कर हमारी शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ कर विश्व की अग्रणी शिक्षा एवं ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित कर अपने खोए हुए विश्वगुरु के गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इसे हम शिक्षा व्यवस्था में निम्न प्रकार से समायोजित कर सकते है -

1) छात्रों को परिणामोन्मुखी से कर्म आधारित परिणामोन्मुखी कर्म की ओर मोड़कर कर्म की प्रधानता एवं कर्मण्य रहना सिखाया जाये क्योंकि कर्मरुपी परिश्रम हमें फल की सहज प्राप्ति मे सदैव सहायक होगा ।

2) छात्रों के समक्ष गीता मे निर्दिष्ट सात्विक, राजसी एवं तामसी व्यक्तित्व के प्रकारों का वर्णन कर उन्हें अपने लिए सही व्यक्तित्व प्रकार का चयन करने एवं उसे विकसित करने का अवसर दें ।

3) छात्रों को गीता में निर्दिष्ट सात्विक, राजसी एवं तामसी प्रकृति के लोगों के लिए बताए गए आहारों की चर्चा कर के उन्हें अपने लिए सही आहार चयन करने व उसे अपनाने को प्रेरित करें। साथ ही साथ गीता में बताए गए आहार विज्ञान के तथ्यों को संतुलित आहार रुपी आधुनिक आहार प्रकार से सम्बद्ध कर बताया जाए ।

4) गीता के अनुसार बताए गए मार्ग अनुसार छात्रों के संदेह या मोह को मिटाने के लिए उन्हें अध्यापक से, सहपाठियों से प्रश्न करना यदि आवश्यकता हो तो स्वयं से भी प्रश्न करना सिखाया जाए ।

5) छात्रों को गीता द्वारा प्रदत संवाद विधि, समस्या समाधान अन्त:क्रिया विधि, प्रश्नोत्तर विधि, चर्चा विधि आदि से पढ़ाया जाए । जोकि आधुनिक शैक्षिक प्रौद्योगिकी के सम्प्रत्यय के अनुसार सभी लोकतांत्रिक एवं छात्र केंद्रित शिक्षण विधियाँ है ।

6) गीता में वर्णित नागरिक के गुणों को छात्रों में विकसित कर उन्हें महान देश का ज़िम्मेदार नागरिक बनाया जा सकता है ।

7) गीता में वर्णित मन की तपस्याओं यथा संतोष, गंभीरता, सरलता एवं आत्म संयम में प्रशिक्षित कर हमारे विद्यालयों की अनुशासन की समस्या का समाधान किया जा सकता है ।

8) गीता में अध्यापक के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया है कि उसे काम, क्रोध एवं लोभ का त्याग कर शिक्षण करना चाहिए ताकि व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धान्तों का अनुसरण हो सके ।

9) अठारहवें अध्याय में अध्यापकों के लिए आचार संहिता के सूत्रों के रूप में कहा गया है कि -
-उन्हें यज्ञ, दान, तपस्या का त्याग नहीं करना चाहिए ।
- उन्हें निर्दिष्ट कर्तव्यों को कभी नहीं त्यागना चाहिए ।
- उन्हें वृत्ति परक कार्यों को ही करना चाहिए ।
- उन्हें सहज वृति कभी नहीं त्यागनी चाहिए ।
- उन्हें छात्रों को ज्ञान के मार्ग की प्राप्ति का मार्ग सदैव प्रशस्त करना चाहिए ।
- अध्यापक की वाणी में मिठास, संतोष, सरलता, गंभीरता एवं आत्मसंयम जैसे व्यक्तित्व के गुण विद्यमान् होने चाहिए ।

10) गीता में कहा गया है कि विवेक हीन संसार विनाशक कार्यों में प्रवृत होता है।अतः अध्यापक को कक्षा रूपी समाज को जागृत कर बुद्धिहीन व उद्विग्न होने से रोकना चाहिए अत: उसे ज्ञान एवं कर्म में छात्रों को सलंग्न कर मार्गदर्शन करना चाहिए ।

11)स्थाई ज्ञान की प्राप्ति हेतु छात्रों की शंकाओं का निवारण करते हुए उन्हें ज्ञान प्रदान किया जाए।

12) श्रीमद् भगवद् गीता के दसवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण द्वारा उत्पन्न किए गये विविध जीवों के विभिन्न गुण बताए गए हैं । इनका अध्यापकों को स्वयं ज्ञान करना चाहिए तथा छात्रों को भी इनका ज्ञान कराना चाहिए ताकि

व्यक्तिगत विभिन्नताओं रूपी आधुनिक मनोविज्ञान के सम्प्रत्यय का सही से बोध हो सके ।

13) श्रीमद् भगवद् गीता में प्रत्येक जीव से मैत्री भाव रखने को कहा गया है। यदि इसे विकसित किया जाए तो आज के आधुनिक विषय जैसे मानवाधिकार शिक्षा व शांति शिक्षा आदि की आवश्यकता नहीं होगी और वसुधैवकटुम्बकम का स्वप्न भी साकार हो जायेगा ।

14) श्रीमद् भगवद् गीता में कहा गया है कि निराकार के प्रति आसक्ति हमें प्रगति पाने में अवरोधक है अत: अध्यापक द्वारा सूक्ष्म विषयों, विषय वस्तु, प्रकरणों आदि को स्थूल, सम्बद्ध एवं विश्वसनीय बनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि विषयवस्तु के ज्ञान रूपी प्रगति सुनिश्चित हो सके।

15) श्रीमद् भगवद् गीता में कुरुक्षेत्र में घटित अर्जुन-कृष्ण संवाद को संजय द्वारा धृतराष्ट्र को हस्तिनापुर मे बताया जाना यह संकेत करता है कि उस समय आज के लाइव टेलीकास्ट (Live Telecast) के लिए आवश्यक कठोर, मृदुल एवं प्रणाली उपागमों की उपलब्धता थी जिसका अब वैज्ञानिक विश्लेषण कर ग्रहण करने की आवश्यकता है ।

16) श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को विराट रूप के दर्शन हेतु दिव्य दृष्टि प्रदान की गई थी जो कि आज के आधुनिक युग के कठोर उपागम थ्री डी चश्मे (3D Gogles) की उपस्थिति की ओर संकेत कर उस समय की तकनीकी उत्कृष्टता को इंगित करता है। जिसका वैज्ञानिक विश्लेषण कर ग्रहण करने की आवश्यकता है ।

17) श्रीमद् भगवद् गीता में छात्र को समझाने के लिए अध्यापक को छात्र के स्तर पर जाकर विषय वस्तु को दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों एवं परिस्थितियों से सम्बद्ध कर सिखाने की कोमल प्रौद्योगिकी बतायी गई है । जिसे दैनिक कक्षा शिक्षण मे भी ग्रहण किए जाने की आवश्यकता है ।

18) श्रीमद् भगवद् गीता में वर्णित, छात्र को उद्देश्य केंद्रित रखने की, उसे अभिप्रेरित करने की, उसे पृष्ठपोषण प्रदान करने की और उसका सतत आंकलन करते रहने की कोमल प्रौद्योगिकी कक्षागत सफलता में सहायक सिद्ध हो सकती है ।

19) श्रीमद् भगवद् गीता में वर्णित वर्ण व्यवस्था, व्यक्तित्व प्रकार (सत-रज-तम), आहार व्यवस्था (सत-रज-तम), कर्म योग, क्रोध से बुद्धि नाश तक की यात्रा, कामरूपी दुर्जेय शत्रुओं पर विजय, मोक्ष की प्राप्ति, कृष्ण रूपी परम धाम की प्राप्ति, जन्म मरण की प्रणाली, खाने, सोने एवं कार्य करने तथा मनोरंजन करने आदि से संबंधित प्रणालियों को विस्तार से बताया व समझाया गया है जो कि हमें श्रीमद् भगवद् गीता मे प्रणाली उपागम की उपस्थिति दर्शाता है । जिसका अनुसरण कर आज की शैक्षिक प्रणाली में प्रणाली उपागम की उपादेयता से लाभान्वित हुआ जा सकता है ।
20) श्रीमद् भगवद् गीता हमें एक के विकास से सबके विकास तक जाने का मार्ग प्रशस्त करती है । जिसका अनुसरण कर अच्छे नागरिक सृजित कर देश को विश्वगुरु के रूप में पुनः स्थापित किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1) श्री श्रीमद् ए. सी. वेदान्त स्वामी प्रभुपाद (1983) भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, मुम्बई ।
2) एस. पी. कुलश्रेष्ठ (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।